

रविवार 24 मार्च, 2019

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठ: यिर्मयाह 2 : 11

“क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को बदल दिया जो परमेश्वर भी नहीं हैं?”

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 51 : 4-6

यशायाह 32: 17, 18

- 4 हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर ध्यान धरो; हे मेरे लोगो, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी, और मैं अपना नियम देश देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर करूंगा ।
- 5 मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है; मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों का न्याय करूंगा । द्वीप मेरी बाट जाहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे ।
- 6 आकाश की ओर अपनी आंखें उठाओ, और पृथ्वी को निहारो; क्योंकि आकाश धुंए ही नाई लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी, और उसके रहने वाले यों ही जाते रहेंगे; परन्तु जो उद्धार मैं करूंगा वह सर्वदा ठहरेगा, और मेरे धर्म का अन्त न होगा ॥
- 17 और धर्म का फल शांति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा ।
- 18 मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेंगे ।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 90 : 1, 2

1. हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है ।
2. इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है ॥

2. भजन संहिता 115 : 1-8, 11

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड किरिचयन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था । यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने किरिचयन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है ।

1. हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन अपने ही नाम की महिमा, अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर ।
2. जाति जाति के लोग क्यों कहने पाए, कि उनका परमेश्वर कहां रहा?
3. हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में हैं; उसने जो चाहा वही किया है ।
4. उन लोगों की मूर्तें सोने चान्दी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं ।
5. उनका मुंह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकतीं; उनके आंखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकतीं ।
6. उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं; उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सूंघ नहीं सकतीं ।
7. उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं; उनके पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकतीं; और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं ।
8. जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनाने वाले हैं; और उन पर भरोसा रखने वाले भी वैसे ही हो जाएंगे ॥
11. हे यहोवा के डरवैयो, यहोवा पर भरोसा रखो! तुम्हारा सहायक और ढाल वही है ॥

3. 2 राजा 6 : 1, 2, 4 (तथा)-7

- 1 और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा, यह स्थान जिस में हम तेरे साम्हने रहते हैं, वह हमारे लिये सकेत है ।
- 2 इसलिये हम यरदन तक जाएं, और वहां से एक एक बल्ली ले कर, यहां अपने रहने के लिये एक स्थान बना लें; उसने कहा, अच्छा जाओ ।
- 4 तो वह उनके संग चला और वे यरदन के तीर पहुंच कर लकड़ी काटने लगे ।
- 5 परन्तु जब एक जन बल्ली काट रहा था, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकल कर जल में गिर गई; सो वह चिल्ला कर कहने लगा, हाय! मेरे प्रभु, वह तो मंगनी की थी ।
- 6 परमेश्वर के भक्त ने पूछा, वह कहां गिरी? जब उसने स्थान दिखाया, तब उसने एक लकड़ी काट कर वहां डाल दी, और वह लोहा पानी पर तैरने लगा ।
- 7 उसने कहा, उसे उठा ले, तब उसने हाथ बढ़ा कर उसे ले लिया ।

4. यशायाह 10 : 15

- 15 क्या कुल्हाड़ा उसके विरुद्ध जो उस से काटता हो डींग मारे, वा आरी उसके विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या सौंटा अपने चलाने वाले को चलाए वा छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है!

5. हबककूक 2 : 18-20

- 18 खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देख कर बनाने वाले ने उसे खोदा है? फिर झूठ सिखाने वाली और ढली हुई मूरत में क्या लाभ देख कर ढालने वाले ने उस पर इतना भरोसा रखा है कि न बोलने वाली और निकम्मी मूरत बनाए?

- 19 हाय उस पर जो काठ से कहता है, जाग, वा अबोल पत्थर से, उठ! क्या वह सिखाएगा? देखो, वह सोने
चान्दी में मढ़ा हुआ है, परन्तु उस में आत्मा नहीं है॥
20 परन्तु यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृथ्वी उसके साम्हने शान्त रहे॥

6. मत्ती 14 : 14

- 14 उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया ।

7. यूहन्ना 6 : 1, 2, 5, 8-12, 16-21, 24-27

- 1 इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात् तिबेरियास की झील के पास गया ।
2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्य कर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उन को देखते थे ।
5 तब यीशु ने अपनी आंखे उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलेप्पुस से कहा, कि हम इन
के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं?
8 उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्दरयास ने उस से कहा ।
9 यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछिलयां हैं परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?
10 यीशु ने कहा, कि लोगों को बैठा दो । उस जगह बहुत घास थी: तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के
थे, बैठ गए:
11 तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठने वालों को बांट दी: और वैसे ही मछिलियों में से जितनी वे
चाहते थे बांट दिया ।
12 जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उस ने अपने चेलों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए ।
16 फिर जब संध्या हुई, तो उसके चले झील के किनारे गए ।
17 और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगे: उस समय अन्धेरा हो गया था, और यीशु अभी
तक उन के पास नहीं आया था ।
18 और आन्धी के कारण झील में लहरे उठने लगीं ।
19 सो जब वे खेते खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते, और नाव के
निकट आते देखा, और डर गए ।
20 परन्तु उस ने उन से कहा, कि मैं हूं; डरो मत ।
21 सो वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिये तैयार हुए और तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची जहां वह जाते थे ।
24 सो जब भीड़ ने देखा, कि यहां न यीशु है, और न उसके चले, तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को
ढूंढते हुए कफरनहूम को पहुंचे ।
25 और झील के पार उस से मिलकर कहा, हे रब्बी, तू यहां कब आया?
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढते हो कि तुम ने अचम्भित
काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए ।
27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे
मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है ।

8. मत्ती 6 : 19, 20, 24 (तु), 25 (सं.), 32 (आपके लिए), 33

- 19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
- 20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
- 24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर ओर दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; “तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते”।
- 25 इसलिये मैं तुम से कहता हूँ, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?
- 32 ...और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।
- 33 इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468 : 9 (वहाँ)-11

पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है।

2. 295 : 5-11

भगवान मनुष्य सहित ब्रह्मांड का निर्माण और संचालन करता है। ब्रह्मांड आध्यात्मिक विचारों से भरा है, जिसे वह विकसित करता है, और वे मन के आज्ञाकारी हैं जो उन्हें बनाता है। नश्वर मन आध्यात्मिक को सामग्री में बदल देता है, और फिर इस तरुटि की नश्वरता से बचने के लिए मनुष्य के मूल स्व को ठीक करता है।

3. 335 : 7 (आत्मा)-12

आत्मा, ईश्वर, ने सभी को स्वयं में बनाया है। आत्मा ने कभी सामग्री नहीं बनाई। आत्मा में ऐसा कुछ नहीं है जिससे सामग्री बनाई जा सके, क्योंकि बाइबल घोषित करती है, बिना लोगो के, परमेश्वर का वचन या वचन, "जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई"

4. 134 : 21-8

सच्चा लोगो प्रदर्शनकारी किरिश्चियन साइंस है, सद्भाव का प्राकृतिक नियम जो कलह को खत्म करता है, इसलिए नहीं कि यह विज्ञान अलौकिक या अप्राकृतिक है, न ही क्योंकि यह ईश्वरीय नियम का उल्लंघन है, लेकिन क्योंकि यह भगवान का अपरिवर्तनीय नियम है, अच्छा है। यीशु ने कहा: "मुझे पता था कि तू मुझे हमेशा सुनता है," और उस ने मरे हुए में से लाजर को जीवित कर दिया, तूफान को रोक दिया, बीमारों को चंगा किया, पानी पर चला गया। भौतिक प्रतिरोध पर आध्यात्मिक शक्ति की श्रेष्ठता में विश्वास करने का दिव्य अधिकार है।

एक चमत्कार भगवान के नियम को पूरा करता है, लेकिन उस कानून का उल्लंघन नहीं करता है। वर्तमान में यह तथ्य चमत्कार से अधिक रहस्यमय प्रतीत होता है। भजनहार ने गाया: "हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलटी बही? हे पहाड़ों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों की नाई, और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़- बकरियों के बच्चों की नाई उछलीं? हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा" यह चमत्कार किसी विकार का परिचय नहीं देता है, लेकिन मौलिक आदेश को प्रकट करता है, भगवान के अपरिवर्तनीय कानून के विज्ञान की स्थापना।

5. 127: 23-2 (सं १.)

क्योंकि सभी सत्य दिव्य मन से आगे बढ़ते हैं इसलिए कोई भौतिक विज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य मानव नहीं है, और यह सामग्री का नियम नहीं है, क्योंकि सामग्री कानून का दाता नहीं है। विज्ञान दिव्य मन का एक प्रतीक है, और केवल भगवान की व्याख्या करने में सक्षम है। इसकी एक आध्यात्मिक उत्पत्ति है और एक सामग्री नहीं है। यह एक दिव्य उच्चारण है, दिलासा देने वाला जो सभी सत्य का नेतृत्व करता है। जिसे प्राकृतिक विज्ञान कहा जाता है, किरिश्चियन साइंस इसे खारिज करता है।

जिसे प्राकृतिक विज्ञान कहा जाता है, किरिश्चियन साइंस इसे खारिज करता है, जहाँ तक यह मिथ्या परिकल्पना पर बनाया गया है कि सामग्री अपने स्वयं के कानून दाता है, यह कानून भौतिक स्थितियों पर स्थापित है, और ये अंतिम हैं और दिव्य मन की शक्ति को खत्म कर सकते हैं।

6. 162 : 12-22

अनुभवों ने इस तथ्य का पक्ष लिया है कि मन शरीर को नियंत्रित करता है, एक उदाहरण में नहीं, बल्कि हर उदाहरण में। आत्मा के अविनाशी संकाय पदार्थ की स्थितियों के बिना और तथाकथित भौतिक अस्तित्व की झूठी मान्यताओं के बिना भी मौजूद हैं। व्यवहार में विज्ञान के नियमों को पूरा करके, लेखक ने अपने गंभीर रूपों में तीव्र और पुरानी बीमारी

दोनों के मामलों में स्वास्थ्य को बहाल किया है। सराव बदल दिया गया है, छोटे अंगों को लम्बा कर दिया गया है, कठोर जोड़ों को कोमल बनाया गया है, और स्वस्थ परिस्थितियों के लिए हिंसक हड्डियों को बहाल किया गया है।

7. 273 : 1-4, 7-18, 21-28

पाप, बीमारी और मृत्यु की सामग्री और इसके दावे ईश्वर के विपरीत हैं, और वे उससे नहीं निकल सकते। कोई भौतिक सत्य नहीं है। भौतिक इंद्रियाँ ईश्वर और आध्यात्मिक सत्य का कोई संज्ञान नहीं ले सकती हैं। ... सामग्री की परिकल्पना से कटौती वैज्ञानिक नहीं है। वे वास्तविक विज्ञान से भिन्न हैं क्योंकि वे ईश्वरीय नियम पर आधारित नहीं हैं।

दिव्य विज्ञान भौतिक इंद्रियों की झूठी गवाही को उलट देता है, और इस प्रकार तरुटि की नींव टूट जाती है। इसलिए विज्ञान और इंद्रियों के बीच की दुश्मनी, और समझ की तरुटियों को समाप्त करने तक सही समझ प्राप्त करने की असंभवता।

सामग्री और चिकित्सा विज्ञान के तथाकथित कानूनों ने नश्वर को कभी भी पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाया है। आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है।

भगवान ने आध्यात्मिक कानून को रद्द करने के लिए कभी भी एक भौतिक कानून का पालन नहीं किया। यदि ऐसा कोई भौतिक कानून होता, यह आत्मा, परमेश्वर की सर्वोच्चता के खिलाफ होगा, और यह निर्माता के ज्ञान को प्रभावित करेगा। यीशु लहरों पर चले गए, भीड़ को खिलाया, बीमारों को चंगा किया और भौतिक कानूनों के विरोध में मृतकों को उठाया। उनके कार्यों में विज्ञान का प्रदर्शन था, भौतिक बोध या कानून के झूठे दावों पर काबू पाने से।

8. 485 : 2-7

भौतिक बोध एक बेतुका वाक्यांश है, क्योंकि सामग्री का कोई एहसास नहीं है। विज्ञान घोषित करता है कि माइंड देखता है, सुनता है, महसूस करता है, बोलता है लेकिन सामग्री नहीं जो भी इस कथन का खंडन करता है वह असत्य भाव है, जो हमेशा बीमारी, पाप और मृत्यु में नश्वर को धोखा देता है।

9. 479 : 8 केवल, 10-15

सामग्री न तो आत्म-अस्तित्व है और न ही आत्मा का एक उत्पाद है। ... सामग्री देख, महसूस, सुन, स्वाद या सूँघ नहीं सकती। यह आत्म-संज्ञान नहीं है, यह खुद को महसूस नहीं कर सकता है, खुद को देख सकता है, न ही खुद को समझ सकता है तथाकथित नश्वर मन को दूर करो, जो सामग्री के कथित स्वार्थ का गठन करता है, और सामग्री किसी अन्य सामग्री का कोई संज्ञान नहीं ले सकती है।

10. 205 : 7-13

विश्वास करने की यह त्रुटि कब सामने आएगी कि भौतिकता में जीवन है, और यह पाप, बीमारी और मृत्यु ईश्वर की रचनाएँ हैं? यह कब समझा जाएगा कि सामग्री में न तो बुद्धिमत्ता है, जीवन है, न ही संवेदना है, और यह कि विपरीत विश्वास सभी दुखों का विपुल स्रोत है? भगवान ने सभी को मन से बनाया, और सभी को पूर्ण और शाश्वत बनाया।

11. 492 : 13-21 (2 को.), 25-28

नए विचार लगातार मंजिल प्राप्त कर रहे हैं। ये दो विरोधाभासी सिद्धांत, कि सामग्री कुछ है, या यह सब मन है, वे जमीन विवाद करेंगे, जब तक किसी को विजेता नहीं माना जाता। अपने अभियान पर चर्चा करते हुए, जनरल ग्रांट ने कहा: यदि यह सभी गर्मियों के मौसम में होता है, तो मैं इसे इस लाइन पर लड़ने का प्रस्ताव देता हूँ। विज्ञान कहता है: सब मन और मन का विचार है। आप इसे इस लाइन पर लड़ना होगा। सामग्री आपको कोई सहायता नहीं दे सकती।

ईश्वर मन है और ईश्वर अनंत है; इसलिए सब मन है। इस कथन पर विज्ञान के होने का पता लगाया जाता है, और इस विज्ञान का सिद्धांत ईश्वरीय है, जिसमें सामंजस्य और अमरता है।

12. 390 : 32-6

सत्य की आत्मा की चेतना की शक्ति में वृद्धि, नश्वर मन की भावनाओं को उखाड़ फेंकने के लिए, अन्य सामग्री, आत्मा की सर्वोच्चता के खिलाफ पैदा हुई। बीमारी और पाप में नश्वर विचार और उसके विश्वासों की छवियों को धब्बा दें फिर, जब आप सत्य, मसीह के निर्णय पर पहुँचेंगे, तो न्यायाधीश कहेंगे, "आप पूरे हैं!"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी

मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक किरिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वेषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6